नारायणपण्डितसङ्गृहीतः

# हितोपदेशः

(मूलपाठेन, अनुवादेन, विविध-विषय-विवरणेन,
कथानुक्रम-मणिकायुतेन, श्लोकानुक्रमणिका,
परीक्षोपयोगि-प्रश्नपद्याद्यनेकविषयैश्च संयुतः)

भाषान्तरकार
पं. रामेश्वर भट्ट
सम्पादक
श्रीनारायण राम आचार्य

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
नई दिल्ली

नारायणपण्डितसङ्गृहितः

# हितोपदेशः

मूलपाठेन, अनुवादेन, विविध–विषय–विवरणेन, कथानक–
मणिकायुक्तेन, श्लोकानुक्रमणिका, पराक्षोपयोगि–
प्रश्नपद्याद्यनेकविषयैश्च संयुतः।


भाषान्तरकार

**पं. रामेश्वर भट्ट**

सम्पादक

**श्री नारायण आचार्य**
'काव्यतीर्थ'



**राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान**
मानित विश्वविद्यालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन
56–57 इन्स्टीट्यूशनल एरिया जनकपुरी, नई दिल्ली – 110058

पुस्तकमिदं राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानस्य पुनर्मुद्रणयोजनायां प्रकाशितम्।
पुस्तक में यदि कोई त्रुटि पाई जाती है, तो इसके लिये मुद्रक जिम्मेदार होगा।

प्रकाशक :
कुलसचिव
**राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,**
मानित विश्वविद्यालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन
56–57 इन्स्टीट्युशनल एरिया,
जनकपुरी, नई दिल्ली – 110058

पुनर्मुद्रित द्वितीय संस्करण
2018

मूल्यम् : 125.00 रुपये

मुद्रक
**नाग प्रकाशन**
11–ए. यू. ए., जवाहर नगर, दिल्ली – 110007

# किञ्चिन्निवेदनम्

'हितोपदेशः' इत्याख्यस्य लोकवाञ्छितग्रन्थस्य द्वितीयं संस्करणं प्रकाशयद् राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानकुटुम्बम् अतितरामानन्दमनुभवति। अस्य ग्रन्थस्य प्रथमे संस्करणे प्रकाशितानां प्रतिलिपीनाम् विद्वद्भिः स्वीकरणेनाऽस्माकं ग्रन्थविक्रयभाण्डागारे एतत्पुस्तकविषयिणी रिक्तता समजनि। तथ्यमिदं ग्रन्थस्यास्य विद्वद्वरेण्यताम् अभिव्यनक्ति। अनुसन्धानपरायणानां विद्यार्थिनां सुधीमतल्लिकानाञ्चाग्रहमुररीकृत्यास्माभिर्द्वितीयं संस्करणम् अस्य ग्रन्थस्य प्रस्तूयते।

आशासे यच्छोभनोपदेशसंभृतं ग्रन्थरत्नमिदं यथा पूर्वं तथाऽस्मिन्नपि पर्याये विपश्चितां हृदि स्थानमवाप्स्यति सुरभारतीसमुपासकानां च प्रकामं मार्गदर्शनं विधास्यति। ग्रन्थस्यास्य पुनर्मुद्रणपुण्यपर्वणि प्रत्तसाहाय्येभ्यः शोधप्रकाशनप्रमुखमुखेभ्यः सर्वेभ्यः संस्थानकुटुम्बसदस्येभ्यो मुद्रकाय च भूरिशो धन्यवादान् प्रयच्छामि।

प. ना. शास्त्री

–प्रो. परमेश्वरनारायणशास्त्री

# भूमिका

विदित हो कि नीति एक ऐसा शास्त्र है कि जिसको मनुष्यमात्र व्यवहार में लाता है, क्योंकि बिना इसके संसार में सुखपूर्वक निर्वाह नहीं हो सकता, और यदि नीति का अवलम्बन न किया जाय तो मनुष्य को सांसारिक अनेक घटनाओं के अनुकूल कृतकार्य होने में बड़ी कठिनता पड़े, और जो लोग नीति के जानने वाले हैं वे बड़े बड़े दुस्तर और कठिन कार्यों को सहज में शीघ्र कर लेते हैं; परन्तु नीतिहीन मनुष्य छोटे छोटे-से कार्यों में भी मुग्ध हो कर हानि उठाते हैं। नीति दो प्रकारकी है- एक धर्म, दूसरी राजनीति; और इन दोनों नीतियों के लिये भारतवर्ष प्राचीन समय से सुप्रसिद्ध है। सर्वसाधारण को राजनीति से प्रतिदिन काम पड़ता है। अत एव विदेशी विद्वानों ने भारत में आ कर नीतिविद्या सीख ली और अपने देशों में जा कर उसका अनुकरण किया और अपनी अपनी मातृ-भाषा में उसका अनुवाद कर के देश को लाभ पहुंचाया॥

यद्यपि राजनीति के एक से एक अपूर्व ग्रंथ संस्कृत भाषा में पाये जाते हैं तथापि पण्डित विष्णुशर्मारचित पञ्चतन्त्र परम प्रसिद्ध है, क्योंकि उस ग्रंथ में नीतिकथा इस उत्तम प्रणाली से लिखी गई है कि जिसके पढ़ने में रुचि और समझने में सुगमता होती है और अन्य देशियों ने भी इसका बड़ा ही समादर किया कि अरबी, फारसी इत्यादि भाषाओं में इसका अनुवाद पाया जाता है। पण्डित नारायणजी ने उक्त पञ्चतन्त्र तथा अन्य अन्य नीति के ग्रन्थों से हितोपदेश नामक एक नवीन ग्रन्थ संगृहीत करके प्रकाशित किया, कि जो

पञ्चतन्त्र की अपेक्षा अत्यन्त सरल और सुगम है और विद्वानोंने हितोपदेश को "यथा नाम तथा गुणाः" समझ कर अत्यन्त आदर दिया, यहां तक कि वर्तमान काल में भारतवर्षीय शिक्षा विभाग में इसका अधिक प्रचार हो रहा है. हितोपदेश के गुणवर्णन करने की कोई आवश्यकता नहीं है कारण उसका गौरव सब पर विदित ही है और उक्त ग्रन्थ पर कई टीकाएँ प्रकाशित होने पर भी निर्णयसागर यंत्रालय के मालिक श्रीयुत **तुकाराम जावजी** महाशय ने मुझ से यह अनुरोध किया कि, हितोपदेश की भाषाटीका इस रीति पर की जाय कि जिससे पाठकों की समझ में विभक्त्यर्थ के साथ आशय भली भांति आ जाय, अत एव मैं अपनी अल्प बुद्धि के अनुसार उसी रीति पर टीका करके पाठकगण को समर्पण करता हूं और विद्वानों से प्रार्थना करता हूं कि जहां कहीं भ्रम से कुछ रह गया हो उसे सुधार लेनेकी कृपाकरें.

मार्ग. शु. ३ भृगौ<br>संवत् १९५१.

**रामेश्वर भट्ट,**<br>प्रथम संस्कृताध्यापक. मु. आ. स्कू. आगरा.

# कहानियोंकी अनुक्रमणिका


पृष्ठ.

**प्रथम भाग-मित्रलाभ**

प्रस्ताविका ... ... ... १
काक, कछुआ, मृग और चूहेका उपाख्यान ... ... १२
बूढ़े वाघ और मुसाफिरकी कहानी १४
मृग, काक और गीदड़की कहानी ... ... ... ३०
अंधा गिद्ध, बिलाव और चिड़ियोंकी कहानी ... ... ३१
चूड़ाकर्ण संन्यासी और एक धनिक हिरण्यक नाम चूहेकी कहानी ... ... ... ४८
चंदनदास बूढ़ा बनिया और उसकी जवान स्त्री लीलावतीकी कहानी ... ... ... ४९
भैरवनामक शिकारी, मृग, शूकर, सांप और गीदड़की कहानी ६३
तुंगबल नामक राजकुमार और जवान बनियेकी स्त्री लावण्यवती और उसके पति चारुदत्तकी कहानी ... ... ... ७३
धूर्त गीदड़ और हाथिकी कहानी ७५

**दूसरा भाग-सुहृद्भेद**

वर्धमान नामक वैश्य, संजीवक नाम वृषभ, पिंगल नामक सिंह, दमनक और करटक नामक २ गीदड़ोंका उपाख्यान ... ८४
अनधिकृत चेष्टा करनेवाले बंदरकी मृत्युकी कहानी ... ... ९३
कर्पूरपट नाम धोबी, उसकी जवान स्त्री, गधा और कुत्तेकी कहानी ... ... ९४
दुर्दान्त नाम सिंह, एक चूहा और दधिकर्ण नामक बिलावकी कहानी ... ... १११
बंदर, घंटा, और कराला नाम कुटनीकी कहानी... ... ११५
कंदर्पकेतु नामक संन्यासी, एक बनिया, ग्वाला और उसकी व्यभिचारिणी स्त्री और दूती नायनकी कहानी... ... १२२
एक ग्वाला, उसकी व्यभिचारिणी स्त्री, कोतवाल और उसके बेटेकी कहानी ...
कौएका जोड़ा और काले साँपकी कहानी ... ... १३१
दुर्दान्त नामक सिंह और एक बूढ़े गीदड़की कहानी ... १३२

यितव्यम् ।' अनन्तरं स वञ्चकः कर्पूरतिलकसमीपं गत्वा साष्टाङ्गपातं प्रणम्योवाच—'देव ! दृष्टिप्रसादं कुरु' । हस्ती ब्रूते-'कस्त्वम् ? कुतः समायातः ?' । सोऽवदत्—'जम्बुकोऽहम् । सर्वैर्वनवासिभिः पशुभिर्मिलित्वा भवत्सकाशं प्रस्थापितः । यद्विना राज्ञाऽवस्थातुं न युक्तम्, तदात्राटवीराज्येऽभिषेकुं भवान् सर्वस्वामिगुणोपेतो निरूपितः ।

ब्रह्मवनमें कर्पूरतिलक नामक हाथी था । उसको देख कर सब गीदड़ोंने सोचा 'यदि यह किसी उपायसे मारा जाय तो उसकी देहसे हमारा चार महीनेका भोजन होगा ।' उनमेंसे एक बूढ़े गीदड़ने इस बातकी प्रतिज्ञा की-'मैं इसे बुद्धिके बलसे मार दूँगा' । फिर उस धूर्तने कर्पूरतिलक हाथीके पास जा कर साष्टांग प्रणाम करके कहा-'महाराज ! कृपादृष्टि कीजिये ।' हाथी बोला—'तू कौन है ? कहांसे आया है' ? वह बोला—'मैं गीदड़ हूं,' सब वनके रहने वाले पशुओंने पंचायत करके आपके पास भेजा है, कि विना राजाके यहां रहना योग्य नहीं है इसलिये इस वनके राज्य पर राजाके सब गुणोंसे शोभायमान होने के कारण आपको ही राजतिलक करनेका निश्चय किया है.

यतः,—

यः कुलाभिजनाचारैरतिशुद्धः प्रतापवान् ।
धार्मिको नीतिकुशलः स स्वामी युज्यते भुवि ॥ २०३ ॥

क्योंकि—जो कुलाचार और लोकाचारमें निपुण हो तथा प्रतापी, धर्मशील, और नीतिमें कुशल हो वह पृथ्वी पर राजा होनेके योग्य होता है ॥ २०३ ॥

अपरं च पश्य,—

राजानं प्रथमं विन्देत्ततो भार्यां ततो धनम् ।
राजन्यसति लोकेऽस्मिन्कुतो भार्या कुतो धनम् ? ॥२०४॥

और देखो—पहले राजाको ढूंढ़ना चाहिये, फिर स्त्री और उसके बाद धनको ढूंढ़े, क्योंकि राजाके नहीं होनेसे इस दुनियामें कहांसे स्त्री और कहांसे धन मिल सकता है ? ॥ २०४ ॥

अन्यच्च,—

पर्जन्य इव भूतानामाधारः पृथिवीपतिः ।
विकलेऽपि हि पर्जन्ये जीव्यते न तु भूपतौ ॥ २०५ ॥



और दूसरे-राजा प्राणियोंका मेघके समान जीवनका सहारा है और मेघके नहीं बरसनेसे तो लोक जीता रहता है, परन्तु राजाके न होनेसे जी नहीं सकता है ॥ २०५ ॥

नियतविषयवर्ती प्रायशो दण्डयोगा-
ज्जगति परवशेऽस्मिन्दुर्लभः साधुवृत्तः ।
कृशमपि विकलं वा व्याधितं वाऽधनं वा
पतिमपि कुलनारी दण्डभीत्याऽभ्युपैति ॥ २०६ ॥

इस परवश ( अर्थात् राजाके आधीन ) इस संसारमें बहुधा दंडके भयसे लोग अपने नियत कार्योंमें लगे रहते हैं और नहीं तो अच्छे आचरणमें मनुष्योंका रहना कठिन है । क्योंकि दंडकेही भयसे कुलकी स्त्री दुबले, विकलांग ( अर्थात् लंगड़े लूले ) रोगी या निर्धनभी पतिको स्वीकार करती है ॥ २०६ ॥

तद्यथा लग्नवेला न विचलति तथा कृत्वा सत्वरमागम्यतां देवेन' । इत्युक्त्वोत्थाय चलितः । ततोऽसौ राज्यलोभाकृष्टः कर्पूरतिलकः शृगालवर्त्मना धावन्महापङ्के निमग्नः । ततस्तेन हस्तिनोक्तम्—'सखे शृगाल ! किमधुना विधेयम् ? पङ्के निपतितोऽहं म्रिये । परावृत्य पश्य' । शृगालेन विहस्योक्तम्-'देव ! मम पुच्छकावलम्बनं कृत्वोत्तिष्ठ । यन्मद्विधस्य वचसि त्वया प्रत्ययः कृतस्तदनुभूयतामशरणं दुःखम् ।

इस लिये, लग्नकी घड़ी न टल जाय, आप शीघ्र पधारिये । यह कह उठ कर चला फिर वह कर्पूरतिलक राज्यके लोभमें फँस कर शृगालके पीछे पीछे दौड़ता हुआ गाड़ी कीचड़में फँस गया । फिर उस हाथीने कहा-'मित्र गीदड़ ! अब क्या करना चाहिये ? कीचड़में गिर कर मैं मरता हूं । लौट कर देख ।' गीदड़ने हंस कर कहा-'महाराज ! मेरी पूंछका सहारा पकड़ कर उठो, जैसा मुझ सरीखेकी बात पर विश्वास किया तैसा शरणरहित दुःख का अनुभव करो ।

तथा चोक्तम्,—

यदाऽसत्सङ्गरहितो भविष्यसि भविष्यसि ।
तदाऽसज्जनगोष्ठीषु पतिष्यसि पतिष्यसि' ॥ २०७ ॥

जैसा कहा है—जब बुरे संगसे बचोगे तब जानो जीओगे, और जो दुष्टोंकी संगतमें पड़ोगे तो मरोगे ॥ २०७ ॥